# वानिकी समाचार

कहते हैं सब वेद पुराण।
पर्यावरण का करो सम्मान।।

वन विभाग राजस्थान का मासिक पत्र

वर्ष : 26 अंक : 9 सितम्बर-2009


# ओजोन परत संरक्षण दिवस का आयोजन

वायुमण्डल में बढ़ते गैसीय प्रदूषण तथा ओजोन परत में क्षरण के बारे में जनचेतना जागृत करने के उद्देश्य से पर्यावरण चेतना केन्द्र, जयपुर में विश्व ओजोन परत संरक्षण दिवस, 16 सितम्बर 09 को मनाया गया, जिसमें स्कूली छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, पर्यावरण प्रेमियों तथा वनकर्मियों ने भाग लिया।

यह आयोजन पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा नेचर क्लब ऑफ राजस्थान (स्वयंसेवी संस्था) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

*विजेता छात्र को पुरस्कृत करते हुए मुख्य वन संरक्षक श्री एस.के. श्रीवास्तव*

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए मुख्य वन संरक्षक श्री एस.के. श्री वास्तव ने कहा कि वायुमण्डल में तापमान का बढ़ना ग्रीन हाउस गैसों में निरन्तर वृद्धि के कारण हो रहा है। बढ़ती हुई क्लोरो फ्लोरो गैसों के कारण ओजोन परत में, ध्रुवों पर, बहुत क्षरण हो रहा है। जो पृथ्वी पर निवास करने वाले मानवों, पादपों तथा जीव-जन्तुओं पर बुरा प्रभाव डाल रही है। अतः आज आवश्यकता है कि छोटे-छोटे उपायों द्वारा हम पर्यावरण संरक्षण की पहल करें। इसमें युवा वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इस अवसर पर क्षेत्रीय वन अधिकारी नरेश शर्मा ने ओजोन परत के महत्व पर छात्र-छात्राओं के सम्मुख एक रोचक परिचर्चा प्रस्तुत की। उप वन संरक्षक जयपुर (दक्षिण) सुश्री शिखा मेहरा ने आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर स्कूली छात्र-छात्राओं के लिए प्रकृति चित्रण, निबंध तथा नारा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में विजेताओं को मुख्य वन संरक्षक, जयपुर द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सूरज जिद्दी ने किया। इस मौके पर सहायक वन संरक्षक सुरेश शर्मा, विष्णु शर्मा तथा पर्यावरण विभाग में पर्यावरण अभियंता डी.के. जोशी भी उपस्थित थे।

# सम्पादकीय...

## बढ़ता प्रदूषण

विश्व समुदाय द्वारा लगातार यह चिंता व्यक्त की जा रही है कि हमारे वायुमण्डल का तापमान बढ़ रहा है। विगत् 19वीं शताब्दी के मुकाबली 20वीं शताब्दी में औसतन 3 से 5 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान में वृद्धि रिकार्ड की गई है जो चिंता का विषय है।

वस्तुतः एक ओर बढ़ते औद्योगिक कारखानों एवं उनसे निकलने वाली गैसों, रात-दिन वाहनों द्वारा उगलते जा रहे कार्बन डाई आक्साईड तथा विषैली गैसों तथा विवेकहीन मानवीय गतिविधियों यथा, खनन,युद्ध, ऊर्जा का उपभोग तथा पॉलीथीन का उपयोग आदि से समस्यायें उत्पन्न हुई है। घटते प्राकृतिक वनों तथा हरे-भरे क्षेत्रों के विनाश ने समस्या को और विकराल बना दिया है।

जितना अधिक हम विकास करते जा रहे हैं और मानवीय उपभोग की आवश्यकता की पूर्ति करते जा रहे हैं, उतना ही प्रकृति का दोहन बढ़ रहा है और प्राकृतिक असंतुलन की स्थितियाँ उत्तरोत्तर बनती जा रही है।

बढ़ते गैसीय प्रदूषण के कारण ही ओजोन परत में छिद्र होने, ग्लेशियर पिघलने, जलवायु परिवर्तन होने, ऋतुओं के चक्र में व्यवधान उत्पन्न होने, वर्षा की अनियमितता एवं अल्पता आदि अनेकानेक समस्यायें उत्पन्न हो रही है जिसका अन्ततोगत्वा हमारे जीवन एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

सभी नागरिकों, प्रकृति प्रेमियों को इस दिशा में चिंतन करना होगा। विशेषकर वनकर्मियों पर तो यह विशेष दायित्व है कि वे समाज में चेतना लाये और अधिकाधिक हरियाली विस्तार में सभी का योगदान लें।

भारत सरकार एवं सभी राज्यों द्वारा इस वर्ष ओजोन परत दिवस मनाने के प्रयास किये गये हैं। राजस्थान के सभी जिलों में पर्यावरण विभाग की सहभागिता से मंडल वन अधिकारियों एवं जिला पर्यावरण समितियों द्वारा संयुक्त रूप से ओजोन दिवसके आयोजन किये गये हैं जो इस दिशा में एक सार्थक कदम है।

## धरती हरी बनाएंगे

□ वी. वैष्णवी

हरा भरा एक प्यारा गांव, बाग बगीचों वाला गांव,
उसी गांव की बात सुनो, सुनो ध्यान से और गुनो।

बहुत अधिक गर्मी पड़ती, गर्म तवे सी धरती जलती,
बादल बाबा आये नहीं, रिमझिम पानी लाये नहीं।

नदी ताल सब सूखे हाथ, प्यासी भैंसे, प्यासी गायें,
प्यासे पौधे, प्यासे धान, बूढ़े बच्चे और जवान।

पंचायत में बात चली, कैसे आये हरियाली,
सोचा हम सब एक काम करें, सब बादल के पास चले।

सात दिवस चलते-चलते, धूप ताप सहते-सहते,
कष्ट उठाते बड़े-बड़े, सब पर्वत पर पहुंच गये।

पर्वत पर बैठा बादल, गुस्से से ऐंठा बादल,
हाथ जोड़, सिर झुका तभी, विनती करने लगे सभी।

हम सब प्यासे तरस रहे, बाबा क्यूं ना बरस रहे,
बात क्रोध की बोली जी, बादल बाबा बोलो जी।

मौन तोड़ बादल बोला, गुस्से का कारण खोला,
पेड़ और पौधे सारे, मेरे ही अपने प्यारे।

पेड़ों को तुम काट रहे हो, काट काट कर छांट रहे हो,
काट दिये हैं वन सारे, उजड़ गये उप वन सारे।

धरती का तन उखड़ा है, इसलिये ही सब बिगड़ा है,
आये क्यूं तुम घर जाओ, पेड़ काटकर सुख पाओ।

बादल ने मारा ताना, पंचों ने यह सब माना,
हाथ जोड़ आये आगे, बाबा अब हम हैं जागे।

पेड़ नहीं हम कार्टेंगे, सब से सुख दुख बांटेंगे,
पौधे और लगायेंगे, धरती हरी बनायेंगे।

सुनकर बादल मुस्कुराया, चलो मैं भी अभी आया,
पेड़-पौधे लगाओगे, तब तुम पानी पाओगे।

धूम धुआरे और काले, बादल आये मतवाले,
गरज-गरज कर पानी बरसा, देख सभी का मन हर्षा।

# ओजोन परत संरक्षण दिवस

• डा. सूरज जिद्दी

पृथ्वी पर सजीव सृष्टि के निर्माण से लेकर आज तक ऊपरी वायुमण्डल में उपस्थित ओजोन गैस एक छतरी की तरह, सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों से जीव मात्र की रक्षा करती आ रही है। यही कारण है कि पृथ्वी की ओजोन छतरी में छेद होने की बात से समस्त विश्व में एक चिन्ता व्याप्त हो गई है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस खतरे से बचने के उपाय खोजे जा रहे हैं।

सम्पूर्ण वायुमण्डल पृथ्वी से शुरू होकर 800 कि.मी. ऊँचाई तक फैला हुआ है। जिसमें तापमान 92 डिग्री सेन्टीग्रेड से 1200 डिग्री सेन्टीग्रेड तक होता हैं। इसमें वायु की अनेक परते पाई जाती है। जो निम्न है।

(1) **क्षोभ मण्डल** : यह वायुमण्डल का सबसे निचला स्तर है तथा पृथ्वी की सतह से 11 कि.मी. की ऊँचाई तक फैला हुआ है। इसमें अधिक मात्रा में धूलकण, बादल व जलवाष्प रहने के कारण मौसमी बदलाव प्रखर रूप में होते हैं। संवहनीय हवायें भी इसी भाग में चलती है, एवं इसमें किसी भी प्रकार के प्राकृतिक व अप्राकृतिक परिवर्तन से जीवन प्रभावित होता है।

(2) **समताप मण्डल** : क्षोभ स्तर के उपर लगभग 13 कि.मी. से 40 कि.मी. तक का क्षेत्र, समताप मण्डल कहलाता है। इस भाग में बादल बिल्कुल नहीं होते है तथा जल कण व जल वाष्प भी अल्प मात्रा में होती है। यहां संवहनीय वायु के स्थान पर क्षितिज प्राकृतिक हवायें बहती है। वायुदाब बहुत न्यून हो जाता है। यहां आंधी, तूफान, गर्जन आदि नहीं होते हैं।

(3) **ओजोन मण्डल** : पृथ्वी से 40 कि.मी. तक ऊपर का भाग ओजोन मण्डल कहलाता है। क्योंकि इस स्तर में ओजोन गैस ($O_3$) की ही अधिकता होती है। इस स्तर में सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों को ओजोन गैस द्वारा सोख लिया जाता है। अतः यह परत मानव जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण रक्षा कवच का कार्य करती है।

(4) **मध्य मण्डल** : लगभग 50 कि.मी. से 85 कि.मी. तक का भाग मध्य मण्डल कहा जाता है। इसमें निचले हिस्से में ओजोन घनत्व अधिक होता है।

(5) **आयन मण्डल** : यह क्षेत्र 85 कि.मी. से लगभग 320 कि. मी. तक का है। इस मण्डल में पराबैंगनी किरणों और सूर्य की विकिरणों की अधिकता के कारण वायुमण्डलीय गैस आयनिक अवस्था में रहती है। इसी कारण इस क्षेत्र को आयन मण्डल कहते हैं। यहां तापमाप अनिश्चित रहता है।

**ओजोन छिद्र** (Ozone Layer Depletion)

जिसे हम ओजोन छिद्र के नाम से जानते हैं, वस्तुतः वह कोई छिद्र नही हैं बल्कि समताप मण्डल में उपस्थित ओजोन गैंस ($O_3$) की एक सघन व मोटी परत का क्षीण होना है। इसे ओजोन परत क्षरण (Ozone Layer Depletion) या ओजोन छिद्र कहते है।

ओजोन परत, पृथ्वी की सतह से लगभग 40 कि.मी. ऊँचाई पर ओजोन ($O_3$) गैस का एक सघन व लगभग 20 कि. मी. मोटाई का घेरा है, जो पृथ्वी के लिए एक सुरक्षा कवच का कार्य करता है। यह सुरक्षा कवच, वायुमण्डल में प्रवेश करने वाली पराबैंगनी किरणों (U.V. rays) को अवशोषित कर पृथ्वी पर पहुंचने से रोकता है।

ओजोन परत को क्षीण करके उसकी मोटाई कम करने में उद्योगों से उत्पन्न वायु प्रदूषण में उपस्थित गैसों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः आवश्यकता है कि गैसीय प्रदूषण को कम किया जावे। इसी उद्देश्य से प्रतिवर्ष 16 सितम्बर को ओजोन परत संरक्षण दिवस मनाया जाता है।

## वनकर्मियों का सम्मेलन

राजस्थान अधीनस्थ वन कर्मचारी संघ का एक दिवसीय सम्मेलन एक सितम्बर को खोले के हनुमान जी में आयोजित किया गया। जिसमें राज्य भर के अधीनस्थ सेवा के वनकर्मियों ने भाग लिया। संघ के संरक्षक भंवरसिंह राठौड़ ने सबका स्वागत किया। सचिव सुभाष सक्सेना तथा बनवारी लाल शर्मा ने इस अवसर पर वन कार्मिकों की समस्याओं पर चर्चा की।

कार्यक्रम में वन राज्यमंत्री, श्री रामलाल जाट, विधायक माहिर आजाद, प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री अभिजीत घोष तथा वरिष्ठ वनाधिकारी गण आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष बलवीर सिंह ने आभार व्यक्त किया।

*यदि चाहो पानी अच्छा बरसे। तो सब लोग वृक्ष लगाओ निज कर से।।*

# पौध वितरण में भी आवश्यक है स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान

❐ नरेश शर्मा

प्रदेश में पारम्परिक वन भूमि एवं राजकीय भूमियों पर वृक्षारोपण कर वानिकी विकास का कार्य कई दशकों से कराया जा रहा है। वर्ष 1992 से राज्य के वन प्रबंधन में जन भागीदारी हेतु नीति निर्धारण की गई है। जिसके उपरान्त गांव–गांव में वन सुरक्षा एवं प्रबंध समितियों का गठन किया जाकर उनको नवीन वन विकास कार्यों से जोड़ा गया है।

प्रदेश के कई हिस्सों, विशेषकर दक्षिणी राजस्थान में साझा वन प्रबंध तकनीक के अच्छे परिणाम सामने आए हैं। इसी के साथ–साथ साझा वन प्रबंध को विस्तृत एवं सुदृढ़ करने हेतु स्वयंसेवी संस्थाओं का भी योगदान बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि अनेक संस्थायें काफी समय से ग्रामीण अंचल में समाज सेवा के कार्य कर रहे हैं। प्रेरित करने पर अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं साझा वन प्रबंध के अन्तर्गत अनेक वन विकास कार्यों से जुड़ी हुई भी हैं। जिससे जन मानस में राजकीय नीतियों को समझाने एवं क्रियान्वित करने के प्रति अच्छी भावनाओं का प्रसार हुआ है, परन्तु अधिकाशंत इन स्वयंसेवी संस्थाओं एवं ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंध समितियों की भूमिका राजकीय भूमि पर वृक्षारोपण तक ही सीमित रही है।

प्रदेश की वन विकास योजनाओं के लक्ष्य पूर्ति करने हेतु राजकीय भूमियों के अतिरिक्त निजी भूमियों पर भी वृक्षारोपण का कार्य करना होगा। इसके लिए हालांकि विभाग पौधे राजकीय पौधाशालाओं से अल्प शुल्क लेकर वितरित करता है, परन्तु कुछ एक क्षणों को छोड़कर लोगों में पौधे प्राप्त कर रोपण करने के प्रति अपेक्षित रूझान परिलक्षित नहीं होता है। पौध वितरण को व्यापक रूप से प्रचारित करने में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका की क्षमताओं का भी अब तक समुचित उपयोग नहीं किया गया है।

लायंस क्लब, जयपुर हवामहल, लायंस क्लब इन्टरनेशनल की ही एक शाखा है जो कि लायंस डिस्ट्रिक्ट 323 – ई–1 के अन्तर्गत आती है। मूलतः समाज सेवा कार्य से जुड़ी यह स्वयंसेवी संस्था जरूरत मंद मानवता की सेवा के हर संभव कार्य करती है। सेवा कार्यों की श्रृंखला में ही लायंस क्लब जयपुर हवामहल ने अपने पर्यावरण सुधार प्रोजेक्ट के अन्तर्गत इस वर्ष पौधों

का वितरण करने का कार्य भी हाथ में लिया है। जिसकी सांकेतिक शुरूआत कंवर नगर प्राथमिक विद्यालय में पौधे वितरण कर की गई है। इसी लॉयस क्लब द्वारा वर्ष 2009–10 में तुलसी, नीम, आंवला, बड़, पीपल, बिल्वपत्र, अशोक आदि के 5000 पौधे ग्रामीण क्षेत्रों में घर–घर जाकर वितरित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जो स्वप्रेरणा से किया गया है। राजकीय विभागों के अतिरिक्त इस प्रकार स्वयं सेवी संस्थायें भी जब गांव–गांव जाकर पौधों का वितरण कर उनको रोपित कर पल्लवित करने का संदेश देकर कार्य करेगी तो वह दिन दूर नहीं जब प्रदेश के हर क्षेत्र में लोग प्रेरित होकर अपनी निजी भूमियों पर भी पौधारोपण करेंगे और प्रदेश की 'हरित राजस्थान' योजना को साकार करेंगे।

## वनकर्मियों की पदोन्नतियाँ

***प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान ने 18 सितम्बर, 09 को एक आदेश जारी कर लम्बे समय से प्रतीक्षारत 83 वनपालों को पदोन्नत कर क्षेत्रीय द्वितीय ग्रेड तथा 19 क्षेत्रीय द्वितीय ग्रेड को पदौन्नत कर क्षेत्रीय प्रथम ग्रेड नया पदस्थापन किया है। राजस्थान वन अधीनस्थ कर्मचारी संघ ने इसके लिए वन मंत्री तथा प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राज. का आभार व्यक्त किया है।***

## अनुरोध :

वानिकी समाचार में प्रकाशनार्थ आलेख, छायाचित्र, विभागीय गतिविधियों की जानकारी, साझा वन प्रबन्ध की सफल कहानियां, कविताएं तथा अन्य सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। यह सामग्री ई-मेल से भी भेजी जा सकती है।

**इस पत्रिका के अंक वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं।**

*– सम्पादक*

**Book-Post**



वन विभाग, राजस्थान के लिए उप वन संरक्षक, वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर द्वारा प्रकाशित एवं प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, जयपुर से मुद्रित। 2009/3000

संरक्षक : अभिजीत घोष; संपादक : यू.एम. सहाय; सहायक सम्पादक : सूरज जिद्दी

Website : www.rajforest.nic.in • E-mail : vanikisamachar@yahoo.com